25 अगस्त स्मृति दिवस पर विशेष -

यज्ञ की अनमोल रत्न 'दादी प्रकाशमणि जी'

आध्यात्मिक ज्ञान से भरी दादी प्रकाशमणि ऐसी सशक्त महिला का नाम है जिसने सम्पूर्ण महिलाओं को शक्ति स्वरूपा बनने का पाठ पढ़ाया। उनकी छिपी हुई शक्तियों को जागृत किया। इसी कारण महिलाएं आज हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तत्पर हैं। उन्होंने विश्व के 130 देशों के लाखों भाई-बहनों को रूहानी सेवा में नियोजित किया। दादी जी ने अपनी अनुपम आध्यात्मिक दक्षता से जीवन मूल्यों की समाज में स्थापना की आधारशिला रखी। दादी प्रकाशमणि जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। वे अपने बाल्यकाल में ही इस विश्व विद्यालय के संपर्क में आयीं। उस समय इस संस्था को ओम मंडली के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपना जीवन मानव कल्याण हेतु समर्पित कर दिया, पर कुछ लोग देहांत के बाद भी अपनी कृति और अव्यक्त स्थिति के द्वारा इस धरा पर सकून फैलाते रहते हैं। दादी प्रकाशमणि जी विदेही बनकर भी सबकी स्मृतियों में सदा दिव्य बनी रही। दादी जी ने अपने यथा नाम तथा गुण के अनुसार एक ऐसी दिव्य आभा के रूप में कार्य किया है जिनके प्रकाश से निराशा का घोर तम स्वयमेव आशा के प्रकाश में परिणत हो जाता है। मानव आत्माएं पवित्र अनुभूति व सद्गुणों से सम्पन्न जीवन जीने के लिए अनुप्रेरित होती हैं।

ऐसी महान विभूति का जन्म सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के हैदराबाद शहर में हुआ था। सन् 1936 में 14 वर्ष की कोमल आयु में ही प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित हुए परमात्मा शिव को पहचान लिया और उन्होंने अपना जीवन प्रभु-अर्पित कर दिया। नारी अपने दिव्य शक्ति रूप में साकार हो उठी। अपनी नैसर्गिक प्रतिभा, दिव्य दृष्टि और मन-मस्तिष्क के विशेष गुणों की सहज वृत्ति के कारण दादी जी ने विश्व के कोने-कोने में ईश्वरीय संदेश को फैलाने में सर्व प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1969 में अध्यात्म की मशाल प्रजापिता ब्रह्मा ने दादी जी को सौंप दिया व स्वयं सम्पूर्णता की ओर इस पार्थिव शरीर को छोड़ अग्रसर हो गए। दादी जी ने संस्था के सर्वांगीण विकास का मार्ग खोल दिया। दादी जी के सुयोग्य नेतृत्व में ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पल्लवन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आभा बिखेरने लगा। समाज का बुद्धिजीवी कहलाने वाला वर्ग आध्यात्मिक तरंगों से वैचारिक क्रांति के स्वरूप का दर्शन करने लगा। इतना ही नहीं, दादी जी ने 5000 से भी अधिक समर्पित शिक्षिकाओं को तैयार करने में सफलता प्राप्त की।

दादी जी के प्रगति-पथ पर निरंतर नए आयाम स्थापित करने के सफल अनुबंध एवं मेधावी प्रशासन के फलस्वरूप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का परामर्शक सदस्य बनाया एवं यूनिसेफ के कार्यों में भी अपनी सहभागिता निभाई। संस्था ने विश्व शांति हेतु कई रचनात्मक एवं सार्थक कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए। उनकी उपादेयता को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1987 में शांति पदक प्रदान किया तथा 5 राष्ट्रीय स्तर के शांतिदूत पुरस्कार प्रदान किए। दादी जी ने संयुक्त राष्ट्र के अनेक कार्यक्रमों को प्रस्तावित रूप में चरितार्थ किया, जैसे -

1. अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष में मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील।
2. अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में युवा उत्सवों एवं युवा पद-यात्राओं का आयोजन।
3. अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में महिला जागरण अभियान और सम्मेलन।
4. अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष में अनेक साक्षरता अभियानों का आयोजन।

इन कार्यक्रमों से विश्व के धरातल पर चातुर्दिक प्रभाव पड़ा और जनमानस में एक नई चेतना जागृत हुई। अध्यात्म के प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु दादी जी द्वारा आकाशवाणी पर सैकड़ों वार्ताएं तथा दूरदर्शन पर साक्षात्कार दिए गए।

दादी जी ने विभिन्न जाति, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने के लिए विश्व वाणी गूंजी और मानवता में विश्व-बंधुत्व का उदय हुआ। भारत के विभिन्न राज्यों के राज्यपालों ने दादी जी का राजकीय सम्मान राजभवनों में किया। राजस्थान के राज्यपाल महामहिम डॉ. एम.चन्ना रेड्डी, महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम सी. सुब्रमण्यम ने प्रियदर्शिनी अकादमी के द्वारा आयोजित समारोह में ग्लोबल पीस हेतु ट्रॉफी प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। उड़ीसा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ ने राजकीय अतिथि के रूप में दादी जी का सम्मान किया। विभिन्न देश-विदेश के नगर प्रमुखों ने दादी जी के सम्मान में सिटी मेडल प्रदान कर गौरव का अनुभव किया। शिकागो में विश्व धर्म संसद शताब्दी कार्यक्रम में दादी जी को मनोनीत अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया।

दादी जी द्वारा आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा के विकास को सामने रखते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने डॉक्टरेट की मानद् उपाधि देकर सम्मानित किया। सामाजिक सेवाओं के उत्कृष्ट कार्यों के लिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार ने ज्वाइन्ट्स अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 1994 भेंट किया। दादी जी ने मात्र यात्राएं ही नहीं कि बल्कि मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए अनेक मार्ग भी खोले। राजयोग शिक्षा एवं शोध संस्थान की स्थापना की, जहां समाज के विभिन्न वर्गों की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 18 प्रभाग निर्मित किए गए और उन प्रभागों में शिक्षाविद् प्रभाग, युवा प्रभाग, स्वास्थ्य प्रभाग, व्यावसायिक प्रभाग, समाज सेवा प्रभाग, सांस्कृतिक प्रभाग, न्यायिक प्रभाग, प्रशासनिक प्रभाग आदि प्रमुख हैं जिनके अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध हुआ जो कि प्राणी मात्र को अध्यात्म का बोध देने में सक्षम है।

विभिन्न क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव व सम्मेलनों का आयोजन दादी जी के नेतृत्व में ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्वत में किया गया। इसके साथ ही साथ देश-विदेश के प्रमुख नगरों में भी इन सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इतना ही नहीं, साक्षर एवं निरक्षर दोनों के लिए सहज ग्राह्य चित्रकला, मूर्ति कला द्वारा आध्यात्मिक बोध के कराने के लिए चित्रों द्वारा विशाल चरित्र निर्माण हेतु मेलों का आयोजन तथा संग्रहालयों का निर्माण दादी जी के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

चरित्रवान, जागरूक व नैतिक बल से सम्पन्न युवा समाज को मिलें - इस हेतु छात्रावासों की रचना की गई तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सद्भाव संवर्द्धन हेतु वैश्विक सदन की स्थापना की गई तथा आक्सफोर्ड में, अखिल विश्व विश्रान्ति केंद्र, न्यूयार्क, शिकागो, सिडनी इत्यादि में खोले गए। ऐसी विशाल हृदय व्यक्तित्व की धनी थी दादी प्रकाशमणि जी। जिनके दर्शन मात्र से ही दु:ख, अशांति एवं चिंताएं कोसों दूर हो जाती थी। आप सबके दिलों में अमर हैं। ऐसी महान विभूति दादी जी ने 25 अगस्त, 2007 को अपने भौतिक देह का त्याग कर नई दुनिया के निर्माण हेतु अव्यक्त यात्रा को प्रस्थान किया। श्रद्धामूर्ति दादी जी पावनता की प्रतिमूर्ति हैं। उन्हें सर्व ईश्वरीय परिवार एवं देश-विदेश की ओर से शत्-शत् नमन।

ईश्वरीय सेवा में

.....